भगवान श्रीकृष्ण और पहरेदार

इयान आर्नॉल्ड द्वारा पुनर्लिखित

वृन्दावन की पावन नगरी उस स्थान के रूप में विख्यात है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बाल्यावस्था बिताई थी। वृन्दावन की वह धरती व उसके आस-पास फैली हरी-भरी वनस्थली जहाँ भगवान ने विचरण किया था, हज़ारों वर्ष बाद भी भक्ति का केन्द्र बनी रही, एक ऐसी नगरी जो कृष्ण-मन्दिरों से भरी हुई है।

यह कहानी वृन्दावन के ऐसे ही एक मन्दिर की है। अत्यन्त नयनाभिराम इस मन्दिर की शोभा देखते ही बनती थी। हाथीदाँत के रंग के शानदार पत्थरों के तोरणों से बना प्रवेशद्वार; भगवान कृष्ण की लीलाओं के, विस्तार से उकेरे गए चित्रों से अलंकृत मन्दिर की छतें; और गर्भगृह के ठीक ऊपर गुम्बद के शिखर पर जगमगाता स्वर्णिम कलश!

मन्दिर के गर्भगृह में भगवान श्रीकृष्ण की तेजस्वी मूर्ति स्थापित थी। चमकते हुए गहन नीलवर्ण की एकदम जीवन्त, आदमक़द मूर्ति! भगवान श्रीकृष्ण का मस्तक एक राजसी मोरपंख और हीरकजड़ित स्वर्ण-मुकुट से शोभायमान था। आस-पास के ही नहीं, दूरस्थ गाँवों के भक्तगण भी भगवान के दर्शन करने आते और अपने हृदय में उनकी ज्योतिर्मय उपस्थिति का अनुभव करते।

हर रात एक पहरेदार मन्दिर की और भगवान कृष्ण की मूर्ति की चोरों से रक्षा करने के लिए गर्भगृह के द्वार के बाहर खड़ा रहता। पन्द्रह वर्षों तक, निरन्तर वही एक पहरेदार, सन्ध्या से प्रभात तक पहरा देता रहा ताकि भगवान की मूर्ति सुरक्षित रहे।

यह पहरेदार, भगवान श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त था। जब वह नवयुवक था, तभी से उसने अपने प्रभु की स्तुति में दर्जनों भजन कण्ठस्थ कर लिए थे। पहरा देते हुए, रात भर वह भगवान श्रीकृष्ण के लिए एक के बाद एक भजन गाता ही रहता।

एक दिन, जब वह पहरा दे रहा था तब देर रात मन्दिर के पुजारी, जो वहाँ से कुछ ही दूरी पर रहते थे, टहलते हुए वहाँ से गुज़रे। दरअसल, उस रात उन्हें नींद नहीं आ रही थी। तीन घण्टे तक बिस्तर पर करवटें बदलते रहने के बाद भी जब उन्हें नींद नहीं आई तो उन्होंने घर के आस-पास ही टहलने जाने का निश्चय किया। पुजारी महाशय एक वृद्ध व्यक्ति थे। उन्होंने भारतीय धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया था और उन्हें अपनी विद्वत्ता पर गर्व भी था। वे एक प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञ व गायक भी थे।

पुजारी जी जब मन्दिर के पास पहुँचे तो अन्दर से आ रही कर्णकटु, भद्दी आवाज़ सुनकर वे चौंक गए। उन्होंने जल्दी-से धक्का देकर मन्दिर के द्वार खोल दिए। अन्दर जाकर उन्होंने पाया कि पहरेदार गर्भगृह के द्वार के सामने खड़ा, झूम-झूमकर ऊँचे स्वर में एक भजन गा रहा है। नाक से निकलती उसकी आवाज़ बड़ी कर्कश और बिलकुल बेसुरी लग रही थी।

"जानते हो क्या कर रहे हो तुम?" पुजारी जी चिल्लाए। "यह भगवान कृष्ण का मन्दिर है! तुम्हारी भद्दी आवाज़ इस स्थान की पवित्रता को नष्ट कर रही है। इन द्वारों के पीछे, स्वयं भगवान हैं और वे सोने का प्रयत्न कर रहे हैं!"

पहरेदार, जो खुद भी चौंक गया था, कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोलने ही वाला था, पर पुजारी जी थे कि उस पर चिल्लाते ही जा रहे थे।

"अभी, इसी समय इस मन्दिर से चले जाओ, और फिर कभी अपना मुँह मत दिखाना!"

पहरेदार को बड़ा धक्का लगा, वह तेज़ी-से मन्दिर से बाहर निकल गया। पुजारी जी उसके बाद भी काफ़ी देर तक क्रोध में सुलगते रहे।

वह अपने आप को समझता क्या है, भगवान के सामने ऐसी आवाज़ में गा रहा था?

आख़िरकार, पुजारी जी का मन शान्त हुआ।

शायद मैं पहरेदार पर कुछ ज़्यादा ही क्रोधित हो गया था, पुजारी जी ने सोचा *। हाँ, अपनी भद्दी आवाज़ में गाकर उसने मन्दिर को दूषित अवश्य कर दिया, पर फिर भी पिछले पन्द्रह वर्षों से वह एक वफ़ादार पहरेदार रहा है। और अब मन्दिर में पहरा देने के लिए सिवाय मेरे और कोई भी नहीं है। मुझे सोच-समझकर क़दम उठाना चाहिए था।*

पुजारी जी ने निश्चय किया कि रात में वे स्वयं ही रखवाली करेंगे और सुबह नया पहरेदार ढूँढ़ना शुरू करेंगे।

अभी एक घण्टा भी नहीं बीता होगा कि पुजारी जी को मन्दिर के गर्भगृह के द्वार के पीछे से किसी की पदचाप-सी सुनाई दी।

धम-धम-धम।

कैसी आवाज़ है यह? पुजारी जी को कौतूहल हुआ।

उन्होंने गर्भगृह के दोनों दरवाज़े जाँच लिए, किन्तु उनमें तो अब भी ताले लगे हुए थे। उनकी नज़र से बचकर अन्दर तो कोई जा ही नहीं सकता था। वे तो पूरी रात जागते ही रहे थे, है न?

धम-धम-धम।

पुजारी जी का हृदय ज़ोर-ज़ोर-से धड़कने लगा।

उन्होंने अन्दाज़ा लगाया, *शायद कोई चालाक चोर होगा जिसने किसी तरह से मन्दिर में जाने का कोई गुप्त रास्ता खोज लिया हो!* पुजारी जी ने द्वार का ताला खोला और अन्दर पहुँचे।

अपने सामने उन्हें जो दृश्य दिखाई दिया, उससे उनका मुँह खुला का खुला रह गया।

उन्होंने देखा कि गर्भगृह के झरोखों से छनकर आती चाँदनी के दमकते प्रकाश में, भगवान श्रीकृष्ण अपनी वेदी पर इधर से उधर टहल रहे हैं।

ऐसा हो सकता है क्या? पुजारी जी सोच में पड़ गए।

हाँ, बिलकुल हो सकता है। वे स्वयं भगवान ही थे, अपने ज्योतिर्मय गहरे नीलवर्ण स्वरूप में, जो झिलमिलाता हुआ मुकुट पहने, चाँदनी में टहल रहे थे।

कितने सौभाग्य से भरी रात है यह! पुजारी जी मन ही मन बुदबुदाए। *मैंने उस असभ्य पहरेदार को निकाल जो दिया, इसीलिए यह चमत्कार हुआ है। मेरे सत्कर्मों से प्रसन्न होकर भगवान श्रीकृष्ण मुझे आशीर्वाद देने आए हैं।*

"हे श्रीकृष्ण भगवान!" पुजारी जी गद्गद होकर कह उठे। "मैंने ऐसे कौन-से पुण्य किए हैं, मेरे परमप्रिय प्रभु, जिसने मुझे आपके इन परम मंगलमय, भव्य दर्शनों का अधिकारी बना दिया है जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी न था?"

भगवान श्रीकृष्ण टहलना बन्द कर खड़े हो गए। अपने सामने खड़े इस व्यक्ति को देखकर उन्होंने अपनी त्यौरियाँ चढ़ा लीं।

"मैं सो नहीं पा रहा हूँ," भगवान ने उत्तर दिया। "जो व्यक्ति सारी रात मेरे लिए लोरियाँ गाता है, उसने गाना ही बन्द कर दिया है।"

पुजारी जी एक बार फिर स्तब्ध रह गए। उन्होंने आश्चर्य से सोचा, *क्या भगवान ने अभी-अभी उस पहरेदार की बेढंगी आवाज़ को "लोरियाँ" कहा?*

कुछ पल बाद, पुजारी जी को सुध आई और उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को आश्वस्त किया, "चिन्ता न करें, मेरे प्रभु। मैं गाऊँगा आपके लिए। मैं अत्यन्त निपुण संगीतज्ञ हूँ। पूरे भारत के लोग मेरे नाम से परिचित हैं।"

पुजारी जी दौड़कर पास वाले कमरे से अपना तम्बूरा ले आए, उसके स्वर मिलाए और वही भजन गाने लगे जिसे उन्होंने पहरेदार को गाते सुना था। उनकी आवाज़ मखमल-सी कोमल थी, उनके सुर एकदम सही थे और उनका तम्बूरावादन बिलकुल त्रुटिहीन था।

कुछ क्षण सुनने के बाद, भगवान श्रीकृष्ण ने अपना हाथ हिलाकर पुजारी जी को बजाना बन्द करने का संकेत किया।

पुजारी जी परेशान हो उठे। उन्होंने सोचा, *शायद प्रभु को यह भजन पसन्द नहीं होगा, चलो मैं उन्हें दूसरा भजन सुनाता हूँ।*

पुजारी जी पुनः गाने के लिए अपना मुँह खोलने ही वाले थे कि भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

"हे पुजारी, आज तक जितने भी उत्कृष्ट, अत्यन्त प्रवीण संगीतकार हुए है, उनमें से बहुतों ने मेरे लिए गाया-बजाया है। किन्तु मुझे शायद ही कभी वैसा स्वर सुनने को मिला हो, जैसा कि उस पहरेदार का था। पिछले पन्द्रह वर्षों से मैं हर शाम उसे बड़े आनन्द से सुनता आ रहा हूँ। उससे मेरी आत्मा को बड़ी प्रसन्नता मिलती है।"

"लेकिन, लेकिन मेरे प्रभु," पुजारी जी हकलाते हुए बोले। "उस पहरेदार को तो स्वरों का कोई ज्ञान ही नहीं है और उसकी आवाज़ भी गर्दभ जैसी है। मैं आपको वचन देता हूँ कि अपने संगीत से मैं आपको प्रसन्न कर दूँगा। मैं एक बार फिर से आपके लिए अपना तम्बूरा बजाता हूँ, आप इसके सुखद, मन्द-मन्द स्वरों को सुनते-सुनते विश्राम करें।"

भगवान ने इनकार में अपना सिर हिलाया। "जाओ उस पहरेदार को लेकर आओ, जल्दी।"

इसके आगे पुजारी जी कुछ बोल न सके, इसलिए वे सीधे उस पहरेदार के घर गए। घर के दरवाज़े के बाहर खड़े, उन्हें अन्दर रोने की, सिसकियों की दबी-दबी-सी आवाज़ सुनाई दी। गहरी साँस लेकर पुजारी जी ने सामने वाले दरवाज़े को तीन बार खटखटाया।

काफ़ी देर बाद पहरेदार ने दरवाज़ा खोला। उसका चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ था।

"तुम रो क्यों रहे हो?" पुजारी जी ने पूछा।

पहरेदार ने कहा "पुजारी जी, मुझे अपनी हर प्रिय चीज़ से दूर कर दिया गया है। मेरे प्यारे मन्दिर से। मेरे परमप्रिय प्रभु से। मेरे जीवन का मोल तो केवल भगवान श्रीकृष्ण की सेवा करते रहने में ही है।"

“ठीक है, मैं तुम्हें एक शुभ समाचार देने आया हूँ।” पुजारी जी ने नज़रें झुकाकर कहा। भगवान कृष्ण चाहते हैं कि तुम उनके लिए गाओ, उन्होंने तुम्हें बुलाया है।”

पहरेदार अवाक् रह गया।

“अब यहाँ बस खड़े मत रहो। प्रभु तुम्हारी राह देख रहे हैं!” पुजारी जी ने ज़रा जोर-से कहा।

पहरेदार और पुजारी जी, दोनों जल्दी-जल्दी मन्दिर की ओर चल दिए। मन्दिर पहुँचकर गर्भगृह का द्वार खोला तो भगवान श्रीकृष्ण अब भी टहल रहे थे।

“तुम्हारे जाने के बाद मैं सो ही नहीं पाया,” पहरेदार के सामने खड़े भगवान श्रीकृष्ण ने कहा। “चलो पहरा दो और अपने भजन गाओ, जैसा तुम हर रात करते आए हो।”

पहरेदार घुटनों के बल बैठा, विस्मयभरी दृष्टि से नीलवर्ण भगवान को निहारता रहा। फिर वह उठ खड़ा हुआ, दरवाज़े के पास अपने नियत स्थान पर गया और गाने लगा। उसकी आवाज़ पहले जैसी ही कर्कश थी, और अब तो पहले से भी ज़्यादा थरथरा रही थी, लड़खड़ा रही थी। किन्तु जब पुजारी जी ने भगवान की ओर देखा, तो उनकी आँखें बन्द थीं . . . मुखमण्डल पर एक सौम्य-मधुर मुस्कान खेल रही थी।

पुजारी जी ने भी अपनी आँखें बन्द कर लीं और सुनते-सुनते उन्हें उस पहरेदार की आवाज़ में एक ऐसी ध्वनि सुनाई दी जो उन्होंने इससे पहले कभी नहीं सुनी थी। वह ध्वनि सूक्ष्म थी, संगीत के किसी स्वर से अधिक, वह एक स्पन्दन जैसी थी। फिर भी, उसे सुनते-सुनते, धीरे-धीरे उन्हें इस बात का भान ही न रहा कि वह ध्वनि कहाँ से आरम्भ हो रही है और कहाँ समाप्त हो रही है।

धीरे-धीरे, पुजारी जी को महसूस होने लगा कि उनके मन में वेग-से उठते विचार व प्रश्न, उस ध्वनि में विलीन होते जा रहे हैं; उनकी चेतना, उनके हृदय में अधिकाधिक गहरे उतरती जा रही है। और जल्द ही उन्हें महसूस होने लगा कि उनकी पूरी सत्ता में विशुद्ध आनन्द की बाढ़-सी आ गई है। आख़िरकार, उन्हें एहसास हुआ कि अब तक उन्होंने जो कुछ भी सुना था, वे तो मात्र स्वर थे, मात्र आवाज़ थी। पर यह, बिलकुल ही अलग था। यदि इसे कुछ कहा जा सकता है तो अवश्य ही यह विशुद्ध प्रेम की ध्वनि होगी।

धीरे-धीरे रात बीतती गई, और पहरेदार अपने प्रभु जी के लिए एक के बाद एक भजन गाता रहा। साथ-साथ, पूरी रात ऐसा भी लगता रहा मानो यह सब कुछ किसी अन्य ही लोक में घटित हुआ हो—मानो पहरेदार जब गा रहा था तब समय का अस्तित्व रहा ही न हो।

अरुणोदय से पहले की प्रशान्ति में भगवान अपनी वेदी पर लौट आए और उन्होंने अपनी सहज मुद्रा धारण कर ली। पूर्वी आकाश में जब स्वर्णिम लालिमा छाने लगी, तब भगवान का मुखमण्डल, सुबह की पहली उजली किरण के प्रकाश में नहा उठा। पहरेदार ने गायन बन्द किया और गहन श्रद्धा से भगवान को साष्टांग प्रणाम किया। इस पूरे समय उसकी आँखों से आनन्दाश्रु बहते रहे क्योंकि वह अपने परमप्रिय भगवान श्रीकृष्ण के साथ एकाकार हो चुका था।

पुजारी जी शान्त भाव से, पहरेदार को प्रणाम करते देख रहे थे; उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य मुखमण्डल पर नृत्य करती सूर्य की रश्मियों को देखा। पुजारी जी के गाल पर ढुलक पड़ा, एक अश्रु-बिन्दु, तीव्र ललक का अश्रु-बिन्दु।

भगवान श्रीकृष्ण के बारे में
यह कहानी भारत की एक लोककथा से प्रेरित है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।